eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 01, January 2024

भारतीय संस्कृति एवं लोक साहित्य

[1]डॉ0 नीलम सोनी
[1]सहायक प्राध्यापक, इतिहास, राम सहायक राजकीय महाविद्यालय बैरी शिवराजपुर, कानपुर, उ0प्र0

Received: 20 December2023 Accepted & Reviewed: 25 December2023, Published : 01 Jan 2024

Abstract

भारतीय संस्कृति की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो विश्व के अन्य देशों की संस्कृति में दृष्टिगत नहीं होती है। अपने विशिष्ट तत्वों के कारण ही भारतीय संस्कृति ने विश्व के देशों में अपनी महत्ता को बनाये रखा है, भारतीय संस्कृति के निर्माण का क्रम निरन्तरता एवं प्रवाह से अभिभूत है, अतः दीर्घकाल के नैरन्तर्य ने इसे विशिष्ट विशेषताओं से सिंचित किया है। लोक साहित्य को लोक संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है, क्योंकि इसमें लोक संस्कृति के सभी अंगों की झलक मिलती है।

किसी भी समाज की मान्यताएं, अंधविश्वास, त्योहार, रीतिरिवाज, गीत, गाथा, किस्से, कहानियां कहावतें, मुहावरे आदि का परिचय हमें लोक साहित्य के द्वारा ही मिल सकता है। भारतीय संस्कृति में लोक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है, लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है, लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव इसलिये उसमें जन–जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोक साहित्य मुख्यतया साधारण जनता से सम्बन्धित होता है, साधारण जनजीवन विशिष्ट जन–जीवन से भिन्न होता है। अतः जन साहित्य (लोक साहित्य) का आदर्श विशिष्ट साहित्य से पृथक होता है किसी देश अथवा क्षेत्र का लोक साहित्य वहाँ आदिकाल से लेकर अबतक की उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है।

प्रस्तुत शोधपत्र भारतीय संस्कृति में लोक साहित्य के महत्व विषय पर केन्द्रित है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति में लोक साहित्य की परम्परा को अनवरत रूप से बनाये रखना है।

बीजशब्द– भारतीय संस्कृति, गाथा, लोक महाकाव्य, परम्परायें, रीतिरिवाज।

Introduction

भारतीय संस्कृति में लोक साहित्य का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है किसी भी देश अथवा क्षेत्र का लोक साहित्य वहां के आदिकाल से लेकर अब तक की उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है जो साधारण या जनस्वभाव के अन्तर्गत आती है लोक साहित्य में जन–जीवन की सभी प्रकार की भावनायें बिना किसी कृत्रिमता के समाई रहती है। अगर हमें किसी भी देश, समाज, का अध्ययन करना है तो वहां के लोक साहित्य को जानना पड़ेगा क्योंकि लोक साहित्य से ही हम वहां की विभिन्न गतिविधियों, परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों को जानने में हमें सहायता मिलती है।

बिना लोक साहित्य के समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि समाज में ही व्यक्ति की सारी गतिविधियां सचांलित होती हैं। वर्तमान समय में कहीं न कहीं हम लोक साहित्य को भूलते जा रहे हैं हमें फिर से उसे अपने जीवन में अपनाना होगा ताकि हम पूर्व की भांति पीढ़ी दर–पीढ़ी लोक साहित्य को आगे बढ़ाने का काम करें। आगे आने वाली पीढ़ियों को अपने लोक साहित्य एवं उसके महत्व के बारे में बताना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 03, Issue 01, January 2024

होगा। हमारे जीवन में लोक जीवन जैसी सरलतम, नैसर्गिक, अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोककलाओं में मिलता है वैसा लोक साहित्य दूसरे स्थानों को नहीं मिलता है। लोक साहित्य में मानव हदय बोलता है प्रकृति स्वयं गुनगुनाती है। लोक साहित्य में निहित सौन्दर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है।

अगर हम लोक साहित्य के उदभव की बात करें तो आदि काल से श्रुति एवं स्मृति के सहारे जीवित रहने वाले लोक साहित्य के कुछ विशेष सिद्धांत हैं। इस साहित्य में मुख्य रूप से वे रचनाएं ही स्वीकार की जाती हैं अथवा जीवन पाती हैं, जो अनेक कंठों से अनेक रूपों में बन–बिगड़कर एक सर्वमान्य रूप धारण कर लेती हैं। लोक साहित्य की यात्रा आदिकाल से लेकर अब तक निरन्तर प्रवाहमान है लोक साहित्य में हमें ऐसी बहुत सारी साहित्यिक सामग्री मिलती है। जिनमें हमें एकरूपता देखने को नही मिलती है।

हमारे मनीषियों ने लोक साहित्य में परम्परागत एवं सामूहिक प्रतिभाओं से निर्मित होने के कारण लोक साहित्य को औपौरूषेय की संज्ञा दी है, अगर हम परम्परागत लोक साहित्य का विश्लेषण करें तो हम देखते हैं कि परम्परागत लोक साहित्य किसी एक व्यक्ति की रचना का परिणाम नही है लेकिन इसके कई प्रमाण दिये जा सकते हैं, जैसे अगर हम देखें कि अगर किसी कथा, कहावत का एक जगह पर जो रूप उपलब्ध होता है दूसरी जगह जाते ही उसके भाषा के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के रूप में हम आल्हाखंड को ले तो हम पाते हैं कि सैकड़ों वर्ष से गाये जाने वाले लोक महाकाव्य को आज तक एक रूपता प्राप्त नही हो पायी है। इस कार्य में लोकप्रवृत्ति किसी प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करती है।

स्फुट गीतों में तो केवल पंक्तियां ही इधर–उधर होती है। किन्तु प्रबन्ध गीतों (गाथाओं) एवं कथाओं में घटनाएं भी बदलती रहती है। भारतीय संस्कृति एवं लोक साहित्य का अटूट सम्बंध है हमारे समाज में हर क्षेत्र का अपना लोक साहित्य है जो हमे क्षेत्रीय भाषाओं में सुनने को मिलता है। लोक साहित्य को लोक संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। क्योंकि इसमें लोक संस्कृति के सभी अंगों की झलक मिलती है। किसी भी समाज की मान्यतांए, अंधविश्वास त्योहार, रीतिरिवाज, गीत–गाथा, किस्से, कहांनियां, कहावतें, मुहावरें आदि का परिचय हमें लोक साहित्य के द्वारा ही मिल सकता है। हमें इस लोक साहित्य की परम्परा को बनाये रखना है ताकि आगे आने वाली पीढ़ियां इस परंपरा को और अधिक समृद्ध रखे।

सन्दर्भित ग्रन्थ

1. 'राकेश' राम एकबाल सिंह–मैथिली लोकगीत हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग–2002।
2. डॉ0 कपिल देव द्विवेदी–वैदिक साहित्य एवं संस्कृति , विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी संस्करण 2015
3. परवीन निजाम अंसारी–लोक साहित्य के विविध आयामा, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसील संस्करण, 2016
4. www. jagran.com. रविवार, 18 दिसम्बर, 2022
5. https://hi.m.wiki.pedix.org.wike.
6. https:// loksahitya.weeby.com
7. hi.m.wikibooks.org